



प्रेस विज्ञप्ति

12.12.2025

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), गुरुग्राम आंचलिक कार्यालय ने मेसर्स एंगल इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड, समाधान पेशेवर और नौसेवा बिल्ड वेल् एलएलपी और उसके भागीदारों के मामले में दिल्ली एनसीआर में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत तलाशी अभियान चलाया है। यह कार्रवाई कॉर्पोरेट देनदार की सीआईआरपी प्रक्रिया के दौरान संभावित मिलीभगत के सबूतों के आधार पर की गई है। तलाशी में 33 लाख रुपये की अस्पष्टीकृत नकदी और विभिन्न डिजिटल उपकरण जब्त किए गए हैं।

गुरुग्राम में सेक्टर 70 में 14 एकड़ जमीन पर कृष फ्लोरेस एस्टेट नामक प्रोजेक्ट में फ्लैटों की डिलीवरी नहीं होने के आरोपों पर गुरुग्राम पुलिस और दिल्ली ईओडब्ल्यू द्वारा दर्ज की गई एफआईआर के आधार पर ईडी ने जांच शुरू की।

ईडी की जांच में पता चला कि परियोजना 10 साल से अधिक समय से अधूरी पड़ी थी, जिसमें केवल तीन टावर बनाए गए थे, लेकिन पूरे नहीं किए गए थे, और इसी के चलते होमबायर एसोसिएशन द्वारा दिवालियापन की कार्यवाही शुरू की गई थी।

धोखाधड़ी के प्रमुख प्रमोटर और लाभार्थी अमित कात्याल को पहले 17.11.2025 को गिरफ्तार किया गया था और उसके डिजिटल उपकरणों में उपलब्ध सामग्री से सीआईआर प्रक्रिया की देखरेख करने वाले समाधान पेशेवर (आरपी) के साथ मिलीभगत का पता चला था। एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के साथ धोखाधड़ी की भी जांच चल रही है, और सीआईआरपी के दौरान किए गए मूल्यांकन के अनुसार वास्तविक मूल्य 160 करोड़ रुपये के मुकाबले 31 करोड़ रुपये में 2 एकड़ जमीन की धोखाधड़ी से बिक्री (सीआईआरपी प्रक्रिया से पहले एमओयू के माध्यम से बेची गई) के माध्यम से न्यूनतम वसूली की गई।

तलाशी में घर खरीदारों को पुलिस के समक्ष दायर शिकायतों को वापस लेने के लिए मजबूर करने की मिलीभगत के ठोस सबूत मिले हैं, जो समाधान के लिए एक पूर्व शर्त थी। एक दशक से अधिक समय तक पीड़ित रहने वाले घर खरीदारों के पास आरपी के माध्यम से एसआरए द्वारा रखी गई शर्तों के आगे झुकने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जिसने उनके लेनदारों की कीमत पर समाधान प्रक्रिया की अखंडता से समझौता किया, क्योंकि वे घर खरीदार थे। यह जानबूझकर पूर्ववर्ती प्रमोटरों को आपराधिक देनदारियों से बचाने के लिए डाला गया था, जिससे आईबीसी की भावना को हराया गया।

इसके अलावा, आर.पी. के परिसर से जब्त किए गए दस्तावेजों से पता चला है कि गोपनीय रूप से अभियुक्त प्रवर्तकों के साथ साझा की गई सामग्री सीधे तौर पर एन.सी.एल.टी. के समक्ष उसके द्वारा दायर किए गए परिहार आवेदनों का खंडन करती है, जिसने यह स्थापित किया कि उसने गबन की गई राशि की वसूली के लिए दायर किए गए दावों को रद्द करने के लिए सक्रिय रूप से मिलीभगत की थी।

आगे की जांच जारी है।